

## पद ३२७

(राग: झिंजोटी - ताल: धुमाळी)

ये तो तूने जाना नहीं । बोलता सो कौन है ॥ध्रु.॥ माणिक कहे  
आपहि आप । आपहि बेटा आपहि बाप । कहाँ तेरा पुण्य पाप ।  
आंख मूंचे खोलता सो कौन है ॥१॥